प्रातः क्लास 12/11/68 ओमशांति पिताश्री शिवबाबा याद है?

बेहद की बाप की याद में रहो और बेहद के सुखधाम की याद में रहो। (याद की यात्रा) यह है प्रैक्टिकल में आत्मा और परमात्मा का मेला। जब तुम अपने सेंटर पर रहते हो तो यह मेला नहीं है। दूर है ना। यहाँ तो तुम बाप के सम्मुख हो। आत्माएँ और परमात्मा सम्मुख हैं; क्योंकि यहाँ परमपिता परमात्मा आत्माओं को पढ़ाते हैं। वहाँ आत्माएँ आत्माओं को पढ़ाती हैं। यहाँ बाप बैठ पढ़ाते हैं। बहुत फर्क रहता है। वहाँ तुम भाइयों के परिवार में हो। यहाँ बाप और बच्चे हैं। इसलिए मधुबन का गायन है। मधुबन में मुरली बाजे। बच्चे यह भी जानते हैं कि मुरली मुख से बजती है। इसलिए गऊमुख पर जाते हैं यात्रा करने। काठ की मुरली नहीं बजती है। वह तो कोई भी बजा सकते हैं। छोटे बच्चे भी बजाते हैं। यह तो है ज्ञान मुरली। ज्ञान से सद्गति होती है। बाकी जो मनुष्यों की झूठी गीता सुनी है, उनसे दुर्गति ही हुई है और परमपिता-परमात्मा ज्ञान का सागर से सुनाई हु(ई) गीता से सद्गति होती है। आधा कल्प दुर्गति, आधा कल्प सद्गति, यह गीता के कारण ही होती है। तुमको बताना ही है गीता का कारण। बहुत बच्चे भूल भी करते हैं। क्लीयर नहीं दिखाते हैं। डरते हैं, पता नहीं मनुष्य हंगामा न करें; क्योंकि मनुष्य जानवर, बंदर है ना तो गुरुर-गुरुर करते रहते हैं।

हरेक बच्चे जानते हैं हम स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं। स्वर्ग कैसा होगा वह भी बुद्धि में होना चाहिए। ...हाँ कितनी शांति होगी। कैसे सुनहरी-2 महल आदि बनेंगे भारत में। सभी कंचन ही कंचन होंगे। आत्मा भी कंचन तो शरीर भी कंचन रहती है। वह है ही कंचन दुनिया, जिसको पारस दुनिया भी कहा जाता है। मनुष्यों की बुद्धि ... भी कंचन बन जाती है। महल आदि कितने शोभनिक होंगे। चैतन्य देवताएँ रहते होंगे। फिर मंदिर भी कितने शोभनिक बनते होंगे। हम तो बना न सकें। मॉडल भी नहीं ब.. ....शांति होगी। सागर भी बहुत शांत रहता है। इतने लहरें नहीं होती। सभी शीतल रहते हैं। तुम बच्चों की बुद्धि में होना चाहिए हम अपना पैराडाइज़ बना रहे हैं। यह भी बाप ने समझाया है कैसे तुमने अपना राज्य भाग्य (गंवा)या, फिर लेते हो। रावण 5 विकारों ने तुम्हारा राज्य छीना है। इसमें लड़ाई आदि की कोई बात नहीं उठती। ...ज्य हराया भी बिगर लड़ाई की है। फिर जीत भी बिगर लड़ाई पाते हो। यह बेहद की बात है ना। 5 विकारों के कारण ही तुमने हार खाई है। फिर उन पर तुम जीत पाते हो। इसमें लड़ाई आदि का प्रश्न नहीं उठता। अभी तुम रावण अर्थात् 5 विकारों पर जीत पाने से तुम फिर से अपने स्वर्ग के मालिक बनते हो। बिगर कोई लड़ाई आदि के। सीढ़ी के चित्र में भी कोई लड़ाई झगड़ा है नहीं। गीता में फिर लड़ाई का मैदान दिखा दिया है, वह तो है नहीं। राज्य भी तुम पढ़ाई से लेते हो। यह पाठशाला है ना। इसमें स्थूल मेहनत बिल्कुल नहीं है। बाप क(हते) हैं इन आँखों से जो कुछ देखते हो यह सभी विनाश होने की चीज़ें हैं। अभी तुमको त्रिनेत्री बनाया जाता, त्रिनेत्री बनने से तुम त्रिकालदर्शी बनते हो। त्रिकालदर्शी बनने से त्रिलोकीनाथ बन जाते हो। कृष्ण को त्रिलोकीनाथ कहते हैं। शिव को त्रिलोकीनाथ नहीं कहेंगे। हाँ, वह नॉलेज देते हैं त्रिलोकीनाथ बनने की। त्रिलोकीनाथ, वैकुण्ठनाथ यह भी टाइटिल उनके हैं। अमरनाथ भी है। अमरपुरी में तुम जाते हो। वहाँ काल तो नहीं। यह सारी नॉलेज तुम बच्चों के मंथन होनी चाहिए। स्टूडेंट की बुद्धि में सारा दिन पढ़ाई रहती ... ना। तुम्हारी बुद्धि में भी सारी पढ़ाई है। उनकी है हद की, तुम्हारी है बेहद की पढ़ाई। वह भी स्टूडेंट हैं, (तुम) भी स्टूडेंट हो। यहाँ तो छोटे बच्चे, जवान, बूढ़े आदि सभी इकट्ठे पढ़ते हैं। उन यूनिवर्सिटी आदि में तो ... जवान ही पढ़ते हैं। क्रिमिनल आई रहती है। तुमको जो ज्ञान का तीसरा नेत्र मिलता है यह है सिविल आ....म आत्माएँ भाई-2 हैं। हम आत्माओं को बाप पढ़ा रहे हैं। वह शिवबाबा, बाबा भी है, नॉलेजफुल हैं, इस... पढ़ाते भी हैं, सद्गति भी सभी की कर देते हैं प्रैक्टिकल में। ऐसे नहीं शिवबाबा चला जावेगा, टीचर यह... ही बैठे रहेंगे ..... दूसरा गुरु करना पड़ेगा। नहीं। गुरु की बरात होती ही नहीं। शिव की बारात गाई....

है। तो ज़रूर कोई अर्थ होगा ना। बाप बैठ समझाते हैं हम पवित्र बनेंगे तो बाप के साथ जावेंगे। नहीं तो फिर सज़ा खानी पड़ेगी। बेहद के बाप से बेहद सुख और शांति का वर्सा मिलता है। लौकिक बाप से तो मिल न सके। यह है ही बेहद की बात। तुम बेहद के बाप से पद्मापदम भाग्यशाली बनते हो। सुख और शांति बेहद की मिलती है। फिर लिमिट है 21 पीढ़ी। 21 जन्म नहीं। 21 पीढ़ी अर्थात् बु...पे तक। वहाँ अकाले मृत्यु होती नहीं। यहाँ तो अचानक कोई मरता है, कुटुम्ब का कुटुम्ब भी सारा मर जाता है। एक्सीडेंट होता है तो सारा सारा कुटुम्ब मर पड़ता है। वहाँ यह बातें होती ही नहीं। सागर भी इतना लहराता नहीं जितना यहाँ लहराते हैं। तुम्हारी प्रकृति दासी बनती है। अभी तुम प्रकृति के दास हो। यहाँ तुम डायरैक्ट सुनते हो तो तुमको खुशी भी होती है, धारणा भी अच्छी होती है; परंतु माया है ना। सेकण्ड में जीवनमुक्ति को उड़ा देती है। सेकण्ड में फट से जीवनमुक्ति तुमको मिलती है, फिर भी माया की भी फूंक ऐसी लगती है जो फट से जीवनमुक्ति उड़ा देते हैं। निश्चय होने में बड़ी देरी नहीं लगती है, फिर संशय होने में भी देरी नहीं लगती है। कोई न कोई संशय में आकर पढ़ाई छोड़ देते हैं। स्कूल में न आये, पढ़ाई छोड़ी तो मरे। यहाँ है हन खन। माया के हाथ लगने से ही झट मुरझाये जाते हैं। एक छुई-मुई बूटी भी होती है ना। उनको शर्म बूटी कहते हैं। हाथ लगाने से मुरझाये जाते हैं। बाप भी कहते हैं शर्म नहीं आता है, बाबा के बनकर और फिर माया के बन जाते हो? ऐसे बाप को फारकती वा डायवोर्स दे देते हो, शर्म नहीं आता? जबकि बुद्धि की सगाई बाप से हुई है तो उनको याद करो ना। फिर दूसरे को क्यों याद करते हो? शर्म नहीं आता? क्रिमनल आँखें हो जाती हैं। सगाई अर्थात् बुद्धि में शिवबाबा की याद। स्त्री पुरुष की भी ऐसी सगाई हो जाती है ना। याद ठहर जाती है। स्कूल में बच्चे बैरिस्टरी पढ़ते हैं तो गोया बैरिस्टर साथ सगाई हो जाती है। वह सभी हैं हद की सगाइयाँ। यह है बेहद की सगाई। बेहद के बाप से ही वर्सा लेना है। उन स्टूडेंट्स की है जिस्मानी पढ़ाई। उनमें ही विचार-सागर-मंथन चलता रहता है। तुम्हारी है रूहानी पढ़ाई। अच्छे स्टूडेंट जो होते हैं वह सदैव एकांत में जाकर पढ़ते हैं। तुम्हारी भी पढ़ाई ऐसी है। स्टूडेंट स्टूडेंट में शोभते हैं। आपस में मिलते-जुलते हैं। पढ़ाई पर ही वार्तालाप करते हैं। इस बेहद की पढ़ाई में तो और ही खुशी से लग जाना चाहिए। और एमऑबजेक्ट भी सामने खड़ा है। कोई का भी बाप नया महल बनाता है तो खुशी होती है, सभी को दिखलाते हैं हमारे कैसे बनता है। (मनुष्य) भी समझते हैं यह मेहनत कर बहुत अच्छा महल बनाते हैं। तुम बच्चे भी जानते हमारे महल आदि बहुत अच्छे बनेंगे। अभी सिर्फ उनका सा॰ होता है जो स्वर्ग के मालिक हैं। आगे चल तुमको स्वर्ग भी देखने में आवेगा। आइडिया मिलेगी हम ऐसे-2 महल बनावेंगे; परंतु वह भी फाइनल सा॰ उनको होगा जो विजय माला के दाना हों(गे)। महारथी होंगे। बाप दादा के दिल पर चढ़े हुये होंगे। बाबा यहाँ बैठता है तो कौन-कौन याद आते हैं? ज(ा) सर्विसएबुल बच्चे हैं। कब अहमदाबाद, कब बम्बई, कब कलकत्ता चला जाता हूँ। यह यह बच्चे बहुत अच्छी सर्विस करता हूँ(हैं)। लौकिक बाप को भी फर्स्ट क्लास बच्चे याद पड़ेंगे ना। जो आज्ञा ही नहीं मानते होंगे उनको थोड़े ही याद करेंगे। बेहद का बाप भी अच्छे-2 फूलों को देखेंगे, यह बड़ा अच्छा फूल है। बहुत अच्छी सर्विस करते हैं। बाप के दिल पर चढ़े रहते हैं। देह अभिमान नहीं रहता। यहाँ सुख पाने का लालच न रहती। सुख पाने की परवाह ही नहीं रखते। देही अभिमानी बड़े ही शांत रहते हैं। कोई-2 हेड ब्राह्मणियाँ यहाँ ही बड़ा आराम से रहती हैं। दास-दासियाँ रखती हैं, बिस्तरा बनाओ, चाय ले आओ, यह करो। उनको बाबा देह अभिमानी समझते हैं। बाप कितना निरअहंकारी है! बच्चों को बड़ा-2 म्युज़ियम मिल जाता है तो बस हुकुम चलाने शुरू कर देते हैं। जैसे रानी होकर चलती हैं। बाप तो कहते हैं हम तुम्हारा मोस्ट ओबीडियंट सर्वेंट हैं। तुम हमको पतित दुनिया में बुलाते हो। फिर कब पावन दुनिया में बुलाते हो, जो मैं आकर देखूँ कैसे-2 अच्छे महल में रहते हो? मुझे निमंत्रण देते हो पुरानी दुनिया में। मैं तुम्हारा खुदा दोस्त हूँ। उनको खुदा दोस्त, अल्ला अव्वलदीन भी कहते हैं। दिखलाते हैं बच्चों के ..... से कारने(कारून) के खज़ाने निकल आये। यह कहानी है। तुमको भी वैकुण्ठ का सा॰ होता है। बच्चों ने सभी ..... है। वहाँ कैसे स्वयंवर होती है। फिर बच्चे कैसे होते हैं। यह सभी सा॰ करते थे। अभी वह है नहीं।

तो बाप समझाते हैं बच्चे पुरुषार्थ ऐसा करना है जो यह बन सको। जितना नज़दीक आते जावेंगे तुमको सोने, हीरों के महल चमकते हुये दिखाई पड़ेंगे। तुम बच्चे जानते हो हम अपने लिए ही श्रीमत पर राजाई स्थापन करते हैं। खुशी की बात है ना। यह है प्रैक्टिकल की बात। थ्योरिटीकल नहीं है। दिन-प्रतिदिन तुम बच्चों को खुशी का पारा चढ़ा रहना चाहिए। यह जानते हो ल॰ना॰ ज़रूर नई दुनिया में होंगे। फिर दो कला होंगे, तो न इतने नये महल होंगे, न इतनी खुशी होगी। दो कला का फर्क हो जाता है। त्रेता को स्वर्ग नहीं कहेंगे। सतयुग को स्वर्ग, त्रेता को सेमी स्वर्ग कहेंगे। द्वापर को नर्क कहेंगे। द्वापर में फिर भी अच्छे होते हैं। कलियुग में तो और ही कला कम हो जाती है। अभी तो है कलियुग का अंत। इनको कुम्भी पाक नर्क कहा जाता है। रौरव नर्क कहा जाता। कुम्भकरण के नींद में रहने वाले असुर है ना। विकारियों को कहेंगे कुम्भी पाक नर्क में कुम्भकरण। कितना अच्छे-2 नाम हैं; परंतु मनुष्य समझते थोड़े ही हैं। इनको धन-दौलत बहुत हैं तो अपन को स्वर्ग में समझते हैं। हम तो समझते हैं यह सतयुग-त्रेता में ही नहीं आवेंगे। फिर अंत में आवेंगे। जो थोड़ा बहुत भी ज्ञान सुनते हैं वह आवेंगे ज़रूर। यह नॉलेज ही ऐसी मिलती है। गृहस्थ व्यवहार में रहते हुये पवित्र बनना है और विचार-सागर-मंथन करना है पढ़ाई में। अभी थोड़ा होता है। आगे चल जास्ती होता रहेगा। मौत भी होना है ज़रूर। फिर तुम्हारे में बहुत ताकत आवेगी। बहुत आकर बाप से वर्सा लेंगे। बहुत मददगार बन जावेंगे। कोई जास्ती मदद करेंगे, कोई थोड़ी। याद तो करेंगे ना। याद की यात्रा माना शांति स्थापन करने की यात्रा। इसलिए कहा जाता है हरेक घर-घर को स्वर्ग बनाओ यहाँ। वहाँ तो है ही स्वर्ग। कहने की दरकार ही नहीं। यहाँ कहा जाता है कि स्वर्ग बनाओ। हरेक की बुद्धि में अलफ और बेहद(बे) है। अलफ माना बाप। बे माना बादशाही। जो भी आये उनको यह समझाना है। अलफ बाबा(माना) अल्ला। बे माना बादशाही। अलफ को याद करो तो बादशाही मिलेगी। और कुछ भी कहने का नहीं है। सिर्फ अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो, राजाई तुम्हारी। तुम पैगम्बर बनते हो, सभी को पैगाम देते रहो बाप को याद करो तो स्वर्ग की राजाई तुम्हारी। पैगाम पहुँचावेंगे भी वह जो पूरे निश्चय बुद्धि होंगे और बहुत खुशी चढ़ी हुई होगी। बैज में भी दो अक्षर हैं। शिवबाबा को याद करने से बनना है। बस। फिर 84 जन्मों बाद आकर यह बनेंगे। कितना अच्छा है! यह इनको याद कर यह बनते हैं, वह फिर पुनर्जन्म लेते-2 यह बनते हैं। अभी हम सो यह बन रहे हैं फिर हम सो 84 जन्मों बाद यह बनेंगे। यह चित्र न होता तो समझाना थोड़ा मुश्किल होता। बाप ब्रह्मा द्वारा सभी शास्त्रों का सार बताते हैं। तो फिर ब्रह्मा के हाथ में शास्त्र दे दिया है। शिवबाबा को उड़ा देते (हैं)। यह तो कहते नहीं कि मैं सुनाता हूँ। इन द्वारा बाप सुनाते हैं। बाप कहते हैं इन यज्ञ-तप आदि ... से मैं नहीं मिलता हूँ। मुझे तो अपना समय पर आना पड़ता है। मनुष्य मूँझते हैं पता नहीं किस रूप ... आवेगा। क्या कुत्ते के रूप में आवेगा। गाते भी हैं रथ, तो ज़रूर मनुष्य का होगा ना। कुत्ते में कैसे आवेगा? जैसे जंगली जनावर हैं। बाप कहते हैं तुम जंगली जनावर थे ना। बंदर से भी बदतर थे। बाबा हाँ, हम थे। अब बाप ...न विकारों पर जीत पहनाते हैं। वह सभी हैं भक्ति मार्ग के शास्त्रों की बातें। बाप कहते हैं इन रावण पर ज... पाने से तुम देवता बन जावेंगे। वही मनुष्य देवता, फिर वही मनुष्य असुर बन पड़ते। यह ल॰ना॰ ही (फि)र 84 जन्म लेते-2 यह बंदर बन जावेंगे। यह भी अभी तुम जानते हो 84 जन्मों बाद बरोबर हमारे मिसल जानवर बुद्धि बन जावेंगे। तुमको तो अभी ज्ञान है। सतयुग में यह ज्ञान नहीं होगा। बाप को भी वण्डरफुल कहते हैं, जो वण्डरफुल वर्ल्ड की स्थापना करते हैं। घड़ी-2 बच्चे कहते हैं, बाबा हम भूल जाते हैं। अरे, बाप को क्यों भूलते हो? अपन को तो तुम आत्मा समझो। आत्मअभिमानी बनने में बहुत मेहनत करनी पड़ती है। नॉलेज में (इ)तनी मेहनत नहीं लगती है। यह बाप भी है, टीचर भी है, सद्गुरु भी है। अच्छा बाप को भूलते हो तो टीचर (को) तो याद करो। ..... चांस है। कितना सहज कर देते हैं! फिर भी बुद्धि में नहीं बैठता है। यह भी कहेंगे ड्रामा। अच्छा, मीठे-2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।